माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकण्ड्री परीक्षा वर्ष 2009

1. विषय कोड | 1 | 4 | 0 | परीक्षा का विषय अर्थशास्त्र

परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 25-03-2009

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C,या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2035	B

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्र. 321108

[redacted]

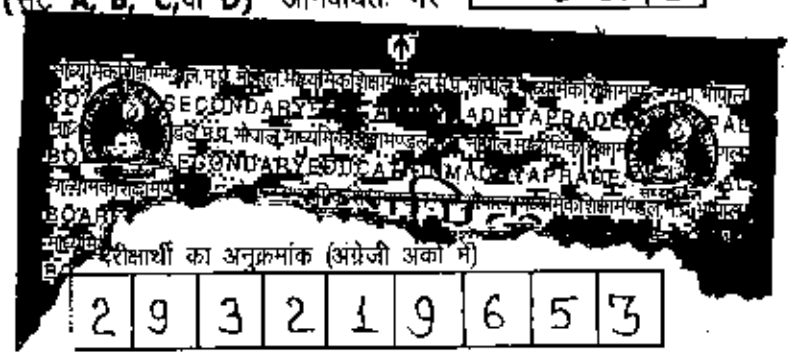

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	3	2	1	9	6	5	3

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :–

[redacted]

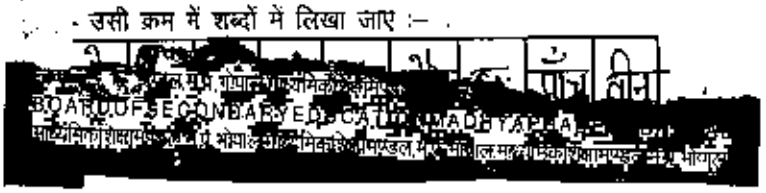

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क :– संख्या शब्दों में एक अंकों में 01

ख :– परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 1 में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ______

नाम रेखा सिंह पद अध्यापक

पता/संस्था शा. हा. सिलपरा

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं। 01

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

प्रश्न	पृ
1	3
2	3
3	4
4	4
5	5
6	5
7	6
8	8
9	9
10	1
कुल प्राप्तांक	

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं के चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 9440290

दिनांक........................ दिनांक........................

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

प्रश्न ⇒ 1
उ० ⇒

(i) समष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य यंत्र आय एवं रोजगार सिद्धान्त है।

(ii) किसी वस्तु की कीमत बढ़ने पर पूर्ति में वृद्धि हो जाती है।

(iii) ~~किसी वस्तु~~ अति अल्पकालीन मूल्य को बाजार मूल्य मूल्य भी कहा जाता है।

(iv) सकल घरेलू उत्पाद − मूल्य ह्रास = शुद्ध घरेलू उत्पाद।

(v) एक देश के जब किसी अन्य देश से व्यापारिक सम्बन्ध न हों तो वह अर्थव्यवस्था बंद अर्थव्यवस्था कहलाती है।

प्र
उ →

(अ) अति अल्पकालीन।
(ब) मानव शक्ति।
(स) करों में वृद्धि करना।
(द) 1 अप्रैल 1935।
(इ) ये सभी।

BSEMP

पृष्ठ

प्रश्न → 3
उ० →

(i) तृतीय क्षेत्र में।

(ii) जीवन प्रत्याशा।

(iii) सन् 2004।

(iv) प्रमाप विचलन गुणांक = $\frac{\sigma}{\bar{x}}$

(v) घाटे की द्वितीय अवस्था।

प्रश्न → 4
उ० →

अ		ब
(अ) आन्तरिक व्यापार	—	एक देश की सीमा के अन्दर
(ब) चालू खाते की मद हैं	—	आयात - निर्यात
(स) सकल घरेलू उत्पाद	—	राष्ट्रीय आय
(द) प्रत्यक्ष कर	—	आय कर
(इ) स्पियरमैन की श्रेणी अन्तररीति	—	सह-सम्बन्ध गुणांक

I M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(5)

प्रश्न ⇒ 5

उ० ⇒ (i) सत्य ।

(ii) असत्य ।

(iii) सत्य ।

(iv) सत्य ।

(v) सत्य ।

प्रश्न ⇒ 6

उ० ⇒ समष्टि अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। क्योंकि इसके बिना समाज की आर्थिक दशाओं का ज्ञान होना असम्भव है। अतः यह अर्थव्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

समष्टि अर्थशास्त्र की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) व्यापक दृष्टिकोण ⇒ समष्टि अर्थशास्त्र का एक अत्यन्त महत्व पूर्ण अंग इसमें निहित व्यापक दृष्टिकोण का है। व्यापक दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए ताकि व्यापक अध्ययन में सहायता करता है।

(2) व्यापक विश्लेषण ⇒ समष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक क्रियाओं को मापने के लिए अधिक विश्लेषण करने का भी गुण पाया जाता है।

P.T.O.

B S E M P

(3) सामूहिक हितों पर का अध्ययन ⇒ समष्टि अर्थशास्त्र में सामूहिक हितों पर अधिक ध्यान दिया जाता है। क्योंकि इसका क्षेत्र व्यापक होता है। अतः सामूहिक हित अत्यन्त महत्व पूर्ण होता है।

(4) आय व रोजगार सिद्धान्त का आधार ⇒ समष्टि अर्थशास्त्र में समस्त देश को आय व रोजगार सिद्धान्त का आधार माना जाता है। आय व रोजगार सिद्धान्त की मान्यता पर समष्टि अर्थशास्त्र काम करता है।

B S E M P

प्रश्न ⇒ 7

उ० ⇒ माँग का नियम ⇒ माँग का नियम हमें कीमत तथा माँग में परस्पर सम्बन्ध को स्पष्ट करता है।

ये नियम कुछ वस्तुओं या परिस्थितियों पर लागू होता है। परन्तु इस नियम के कुछ विशेष प्रकार के अपवाद भी हैं जो कि निम्नवत हैं—

पृष्ठ के अंकों का योग

(1) उपयोगिता ह्रास नियम ⇒ माँग का नियम उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित होता है तथा यह कीमत और माँग के सम्बन्ध को स्थापित करने में बाधा उत्पन्न करता है।

(2) आय प्रभाव ⇒ माँग का नियम कीमत तथा माँग के सम्बन्ध को व्यक्त करता है। यदि उपभोक्ता की आय में परिवर्तन होता है तो माँग का नियम लागू नही हो पाता है।

(3) प्रतिस्थापन प्रभाव ⇒ माँग का नियम कीमत तथा माँग में जिस सम्बन्ध को स्थापित करता है प्रतिस्थापन वस्तुएँ उसे उस सम्बन्ध को लागू नही होने देती।

(4) प्रतिष्ठामूलक वस्तुएँ ⇒ माँग का नियम प्रतिष्ठामूलक वस्तुओं पर लागू नही होता है क्योंकि ये वस्तुएँ आम आदमी की प्रतिष्ठा की द्योतक होती हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न ⇒ 4
उ० ⇒

बाजार से अभिप्राय ⇒ बाजार से आशय एक स्थान से नही अपितु एक सम्पूर्ण क्षेत्र से होता हैं।

"प्रो डिलार्ड के अनुसार ⇒ प्रो. डिलार्ड के अनुसार बाजार एक व्यापक क्षेत्र होता है जिसमें क्रेता तथा विक्रेता स्वतंत्र प्रतियोगिता करते हैं।"

बाजार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं— (चार)

(1) एक क्षेत्र ⇒ बाजार किसी स्थान को नही कहा जा सकता हैं क्योंकि बाजार बाजार एक स्थान न होकर अपितु एक क्षेत्र होता हैं।

(2) क्रेता तथा विक्रेता ⇒ बाजार की विशेषताओं में से एक विशेषता ये भी है कि क्रेता तथा विक्रेता की आवश्यकता होती है जिसके बिना बाजार नही स्थापित हो सकता हैं।

(3) एक मूल्य ⇒ बाजार की एक विशेषता ये है कि एक मूल्य निर्धारित हो सकता हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग [ ]

(4) स्वतंत्र प्रतियोगिता ⇒ बाजार की अनेक विशेषताओं के साथ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता ये है कि बाजार में प्रतियोगिता का होना भी आवश्यक है।

प्रश्न. उ॰ ⇒ पूर्ण रोजगार की स्थिति ⇒ प्रो. किन्स द्वारा निर्धारित पूर्ण रोजगार की वो स्थिति है जिसमें सामूहिक माँग व सामूहिक पूर्ति बराबर हों।

पूर्ण रोजगार को बढ़ाने के चार उपाय निम्नलिखित हैं—

(1) प्रभाव पूर्ण माँग में वृद्धि → सामूहिक माँग वक्र जिस बिन्दु पर सामूहिक पूर्ति वक्र को काटता है, उसे प्रभाव पूर्ण माँग कहते हैं। यदि प्रभाव पूर्ण माँग कम होगी तो बेरोजगारी की स्थिति निर्मित होगी परन्तु यदि प्रभाव पूर्ण माँग अधिक होगी तो पूर्ण रोजगार की स्थिति निर्मित हो जाती है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

P.T.O.

(ए) जीवन स्तर में सुधार ⇒ पूर्ण रोजगार स्तर को बढ़ाने के लिए हमें अपने जीवन यापन के स्तर में सुधार लाना चाहिए ताकि हम हर सुविधाओं के साथ रोजगार की प्राप्ति कर सकें।

(उ) सरकारी नीतियों का निर्माण ⇒ पूर्ण रोजगार के स्तर को निर्धारित करने वाले कारकों में से अच्छी सरकारी नितियों का निर्माण करना चाहिए ताकि सरकारी प्रयास द्वारा पूर्ण रोजगार स्तर की प्राप्ति की जा सकें।

(ऊ) आय के साम्य स्तर का पूर्ण रोजगार सिद्धान्त के बाद निर्धारण —
आय के साम्य स्तर का पूर्ण रोजगार सिद्धान्त का निर्धारण किया जाना चाहिए ताकि आय का साम्य स्तर पूर्ण रोजगार का हो।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(11) [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 11 के अंक | कुल अंक

प्रश्न ⇒ 10

उ० ⇒ भुगतान सन्तुलन का आशय ⇒ भुगतान सन्तुलन को विदेशी विनिमय का भी सिद्धान्त कहा जाता है। भुगतान सन्तुलन से आशय विदेशी मांग तथा विदेशी ~~श्रम~~ पूर्ति का सन्तुलन।

भुगतान सन्तुलन के असन्तुलित होने के कारण —

(1) आयातों में वृद्धि ⇒ भुगतान सन्तुलन के असन्तुलन के कारणों में से एक कारण हमारे देश में आयातों की वृद्धि है। आयातों की वृद्धि के कारण भुगतान सन्तुलन असन्तुलित हो जाता है।

(2) निर्यातों में कमी ⇒ भुगतान सन्तुलन के प्रतिकूलता का प्रभाव निर्यातों में कमी का है क्योंकि निर्यात की कमी के कारण भुगतान सन्तुलन असन्तुलित हो जाता है।

P.T.O

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

(3) विदेशी विनिमय दर में वृद्धि ⇒ भुगतान संतुलन के असन्तुलित होने के कारणों में से एक कारण विदेशी विनिमय दर की कमी करना है। क्योंकि जब मे पर अधिक होते हैं तब भुगतान सन्तुलन प्रतिकूल हो जाता है।

(4) यातायात तथा संचार के साधनों की अपर्याप्तता

यातायात तथा संचार के साधनों की अपर्याप्तता से आशय संचार के साधनों की कमी से है।

(5) खनिजों की कमी ⇒ भुगतान सन्तुलन का मुख्य कारण खनिजों की मात्रा में कमी भी है क्योंकि इसके बिना विनिमय करना कम लाभ कारी है। अतः भुगतान सन्तुलन के प्रतिकूलता के कारण निम्नलिखित हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

यो॰ ५५ ६९

BSEMP

प्रश्न ⇒ 13

उ० ⇒ **करारोपण से आशय** → कर एक अनिवार्य अंशदान है जोकि सामाजिक कल्याण के लिए सरकार द्वारा जनता से वसूल किया जाता है।

करारोपण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

① **आर्थिक विकास** → करारोपण का महत्वपूर्ण उद्देश्य आर्थिक विकास करना है ताकि देश की प्रगति सम्भव हो सके। आर्थिक विकास एक देश की आधार ~~भूत~~ इच्छा होती है।

② **धन का समान वितरण** ⇒ करारोपण के उद्देश्यों में से एक महत्वपूर्ण उद्देश्य राष्ट्र में धन का समान वितरण करना।

③ **आर्थिक विषमता को दूर करना** ⇒ करारोपण के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य देश में फैली आर्थिक विषमताओं को कम करना होता है।

④ **भौतिक विकास मे सहायक** ⇒ करारोपण के मुख्य उद्देश्यों में से भौतिक विकास करना एक तत्व है।

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न ⇒ 12

उ० ⇒ निर्देशांक से आशय ⇒ निर्देशांक एक ऐसी श्रेणी होती है जो अपने झुकाव तथा उच्चावचनों द्वारा अपना परिणाम परिवर्तित करती है।

निर्देशांक की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

① सापेक्षिक माप ⇒ निर्देशांक की विशेषताओं में से एक विशेषता इसमें सापेक्षिक मापों की होती है। यह सापेक्षिक माप होता है।

② संख्यात्मक माप ⇒ निर्देशांक की विशेषताओं में से एक विशेषता ये होती है कि ये संख्याओं द्वारा निरूपित किये जाते हैं।

③ तुलनात्मक अध्ययन ⇒ निर्देशांक में तुलनात्मक अध्ययन करने की विशेषता का गुण पाया जाता है।

④ प्रतिशतों का माध्य ⇒ प्रतिशतों का माध्य भी है, निर्देशांक।

⑤ व्यापक प्रयोग ⇒ निर्देशांकों का व्यापक प्रयोग

BSEMP

मध्यप्रदेश

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 15 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न → 19

उ० → पूर्ति का नियम → पूर्ति का नियम कीमत तथा पूर्ति में सम्बन्ध स्पष्ट करता है। और ये लागू भी होते हैं। परन्तु इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं। जो की निम्नवत है—

(1) भविष्य में परिवर्तन की आशा → पूर्ति का नियम उस समय लागू नही होता जब भविष्य में मूल्य परिवर्तन की आशा पायी जाती है ये नियम का अपवाद स्वरूप होता हैं।

(2) कुछ विशेष कृषि सम्बन्धी कार्य → कुछ विशेष कृषि कामों में भी पूर्ति का नियम लागू नही होता हैं। क्योंकि कृषि मानसून का जुआ होती हैं। कभी अच्छी तथा कभी खराब।

P.T.O.

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(4) नीलाम की जाने वाली वस्तुओं में ⇒ नीलाम की जाने वाली वस्तुओं में भी पूर्ति का नियम लागू नहीं होता है।

(5) स्थानापन्न वस्तुओं ⇒ स्थापन्न वस्तुओं मे पूर्ति का नियम लागू नहीं होता है क्योंकि ये एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में समर्थ होती है।

(5) कलात्मक वस्तुओं पर ⇒ कलात्मक वस्तुओं पर पूर्ति का नियम लागू नहीं होता है क्योंकि ये वस्तुएं भी कलात्मक प्रवृत्ति की होती हैं कभी अच्छी तो कभी खराब जिसके वजह से ये नियम लागू नहीं होता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न ⇒ 10

उ० ⇒ रिजर्व बैंक की स्थापना ⇒ रिजर्व बैंक की स्थापना तीन बैंकों को मिलाकर की गई। रिजर्व बैंक 1 अप्रैल 1935 से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। रिजर्व बैंक एक देश में केवल एक ही होता है। ये केन्द्र सरकार के नियन्त्रण में होता है। तथा ये निम्न लिखित कामों का सम्पादन करता है —

(1) साख नियमन एवं नियंत्रण।

(2) विदेशों की कोष का संरक्षक।

(3) सरकार का बैंकर।

(4) बैंकों का बैंकर।

(5) समाशोधन गृह।

(6) अन्य कार्य।

रिजर्व बैंक उपर्युक्त कार्यों का सम्पादन एवं संचालन करता है। अतः रिजर्व बैंक का मुख्य एक और कार्य भी है मुद्रा का ~~निर्गमन~~ निर्गमन करना। ताकि पूंजीगत अभाव को कम किया जा सके और आर्थिक विकास किया जा सके।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

रिजर्व बैंक के वर्जित कार्य —

(1) ऋण तथा अग्रिम प्रदान करना ⇒ रिजर्व बैंक ऋण द्वारा ऋण तथा अग्रिम देना रिजर्व बैंक का वर्जित कार्य है। ऋण तथा अग्रिम देने से इसमें तरलता साधन आ जायेगे ताकि इन कठिनाइयों से बचा जा सके।

(2) जमा करना ⇒ रिजर्व बैंक को मुद्रा को जमा करने का भी अधिकार प्राप्त है।

(3) विपत्रों को स्वीकार करना ⇒ रिजर्व बैंक विपत्रों को स्वीकार नहीं कर सकता है।

(5) साख नियमन एवं नियंत्रण ⇒ रिजर्व बैंक साख का नियमन तथा नियंत्रण रखने का भी अधिकार नहीं रखता है।

BSEMP

प्रश्न ⇒ 14
उ० ⇒ बजट से आशय ⇒ बजट फ्रांसीसी शब्द ब्यूजे से उत्पन्न होता हैं। जिसका अर्थ होता है चमड़े का थैला। अतः सरकारी आय तथा व्यय को मापने की पद्धति बजट कहलाती हैं।

बजट के उद्देश्यों का वर्णन निम्नलिखित है—

(1) आर्थिक विकास का ज्ञान ⇒ बजट का उद्देश्य आर्थिक विकास की गति का ज्ञान बजट द्वारा लगाया जा सकता हैं। अतः ये बजट का मुख्य उद्देश्य हैं।

(2) राजकोषीय उपकरण ⇒ बजट का उद्देश्य राजकोषीय उपकरण का भी होता है यह राजकोषीय प्रवृत्ति का का मापक उपकरण होता हैं।

(3) सरकारी आय व व्यय का ज्ञान ⇒ बजट का उद्देश्य सरकार में हो रहे सरकारी आय तथा व्यय का ज्ञान लगाया जा सकता हैं अतः यह इसका महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

P.T.O.

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ

(4) सरकारी नीति निर्माण में सहायक ⇒ सरकारी नीति के निर्माण में बजट का मुख्य तत्व होता है। बजट द्वारा किस नीति को कितना बनाना है तथा किस नीति की उपेक्षा करनी है।

B
S
E
M
P

(5) हिसाब देयता का उद्देश्य ⇒ बजट का मुख्य उद्देश्य हिसाब देयता का उद्देश्य होता है क्योंकि हिसाब देयता किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक होती है।

(6) सरकार का नियंत्रण ⇒ बजट का मुख्य उद्देश्य सरकार का नियंत्रण करना बजट का ही एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है।

प्रश्न ⇒ 17
उ० ⇒ भारतीय राष्ट्रीय आय में वृद्धि के सुझाव निम्नलिखित हैं।

① पूँजी का निर्माण ⇒ भारतीय राष्ट्रीय आय में वृद्धि करने के लिए अधिक पूँजी का निर्माण किया जाना चाहिए।

② तकनीकी विकास ⇒ भारतीय राष्ट्रीय आय में वृद्धि हेतु तकनीकी विकास की गति का तीव्र होना चाहिए।

③ साक्षरता दर में वृद्धि ⇒ भारतीय राष्ट्रीय आय में साक्षरता दर में वृद्धि की जानी चाहिए ताकी निरक्षरता की चपेट में समान्य लोग जानकारी के अभाव में अपना योगदान न दे पाये।

④ यातायात तथा संचार की सुविधाओं में वृद्धि

यातायात तथा संचार की सुविधाओं में विकास कर राष्ट्रीय आय में वृद्धि की जा सकती हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(5) बैंकिंग सुविधाओं में वृद्धि द्वारा ⇒ बैंकिंग सुविधाओं में वृद्धि के फलस्वरूप राष्ट्रीय आय में वृद्धि की जाती सम्भव है।

(6) प्राकृतिक संसाधनों का समुचित प्रयोग ⇒ प्राकृतिक संसाधनों का समुचित प्रयोग कर भारतीय राष्ट्रीय आय में वृद्धि की जा सकती है।

S
E
M
P

प्रश्न ⇒ 16
उ॰ ⇒ सीमान्त लागत तथा औसत लागत में सम्बन्ध —

(1) सीमान्त लागत तथा औसत लागतें दोनों ही कुल लागतों के आधार पर निकाली जाती हैं।

(2) जब औसत लागत अधिक होती है तो सीमान्त लागतें और भी तेजी से वृद्धि करती हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

(3) जब औसत लागत कम होती है तो सीमान्त लागत और भी तेजी से कम होती है।

(4) औसत लागत में एक इकाई जोड़ने पर सीमान्त लागत प्राप्त होती है।

(5) औसत लागतों का सम्बन्ध सीमान्त लागत के परिवर्तन शील मूल्यों का होता है।

B S E M P

प्रश्न → 15
उ →

निर्देशांकों से अभिप्राय ⇒ निर्देशांक श्रेणी एक ऐसी श्रेणी है जिसमें पद अपने उच्चावचनों तथा झुकाव को परिवर्तन द्वारा व्यक्त करती है।

~~बिद~~ निर्देशांक में अनेक विशेषताएँ पायी जाती है। जिसके कारण ~~इका~~ इनका अनेक स्थानों में महत्व पूर्ण स्थान होता है। अतः निर्देशांकों का महत्व निम्न लिखित है—

पृष्ठ के अंकों का योग

(1) आर्थिक क्रियाओं का ज्ञान।
(2) आर्थिक विकास की गति का ज्ञान।
(3) जीवन स्तर के ज्ञान में सहायक।
(4) व्यापारिक गतिविधियों का ज्ञान
(5) अन्य अर्थव्यवस्थाओं से तुलनात्मक अध्ययन।
(6) ~~विदेशी~~ आर्थिक नीति निर्माण सहायक।

(1) आर्थिक क्रियाओं का ज्ञान ⇒ आर्थिक क्रियाओं का ज्ञान निर्देशांकों द्वारा ~~आर्थिक~~ लगाया जा सकता है।

(2) आर्थिक विकास की गति का ज्ञान ⇒ आर्थिक क्रियाओं की गति का ज्ञान भी हमें निर्देशांकों द्वारा ही होता है।

(3) जीवन स्तर का सूचक ⇒ निर्देशांकों द्वारा जीवन स्तर की गणना का अनुमान लगाया जाता है।

(4) आर्थिक नीति निर्माण में सहायक ⇒ इस नीति के निर्धारण में सहायक होते हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का यो

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील केन्द्र ... 108 परीक्षक के लिये
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम
7. विषय अर्थशास्त्र 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 25/03/2009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

पृष्ठ

प्रश्न → 18

उ. → **पूर्ण रोजगार का अर्थ** → पूर्ण रोजगार स्तर वहाँ पर निर्धारित होता है जहाँ समग्र माँग तथा समग्र पूर्ति बराबर होती हैं। इसका निर्धारण प्रभाव पूर्ण माँग द्वारा होता है।

पूर्ण रोजगार के लिए निम्न लिखित उपाय हैं—

(1) प्रभाव पूर्ण माँग में वृद्धि।

(2) जीवन स्तर में सुधार।

(3) सरकारी नीतियों का निर्धारण।

(4) सरकारी नीतियों का निर्माण।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

P.T.O.

(2)

भाग पूर्ण पृष्ठ पृष्ठ 2 के अंक कुल अंक

मध्यप्रदेश

B S E M P

① प्रभावपूर्ण माँग में वृद्धि — प्रभाव पूर्ण माँग में वृद्धि के द्वारा पूर्ण रोजगार का स्तर प्राप्त किया जा सकता है।

② जीवन स्तर में वृद्धि के द्वारा ⇒ जीवन स्तर में वृद्धि के द्वारा पूर्ण रोजगार का स्तर प्राप्त किया जा सकता है।

③ सरकारी नीतियों का निर्धारण → सरकारी नीतियों के निर्धारण द्वारा पूर्ण रोजगार में सहायता प्राप्त होगी।

④ आर्थिक विकास ⇒ आर्थिक विकास द्वारा भी पूर्ण रोजगार स्तर को प्राप्त किया जा सकता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

Examination Answer ...

प्रश्न => 21

हल =>

प्रमाप विचलन =>

वर्ग	मध्यमूल्य (x)	आवृत्ति f	(fx)	कल्पित माध्य (a) 35.76
0-10	5	5	25	
10-20	15	8	105	
20-30	25	25	625	
30-40	35	23	805	
40-50	45	16	720	
50-60	55	5	275	
60-70	65	5	315	
		Σf = 85	2870	

प्रमाप विचलन का सूत्र =

$$\sigma = \sqrt{\frac{\Sigma f dx^2}{N} - \left(\frac{\Sigma f dx}{N}\right)^2}$$

S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

रफ कार्य

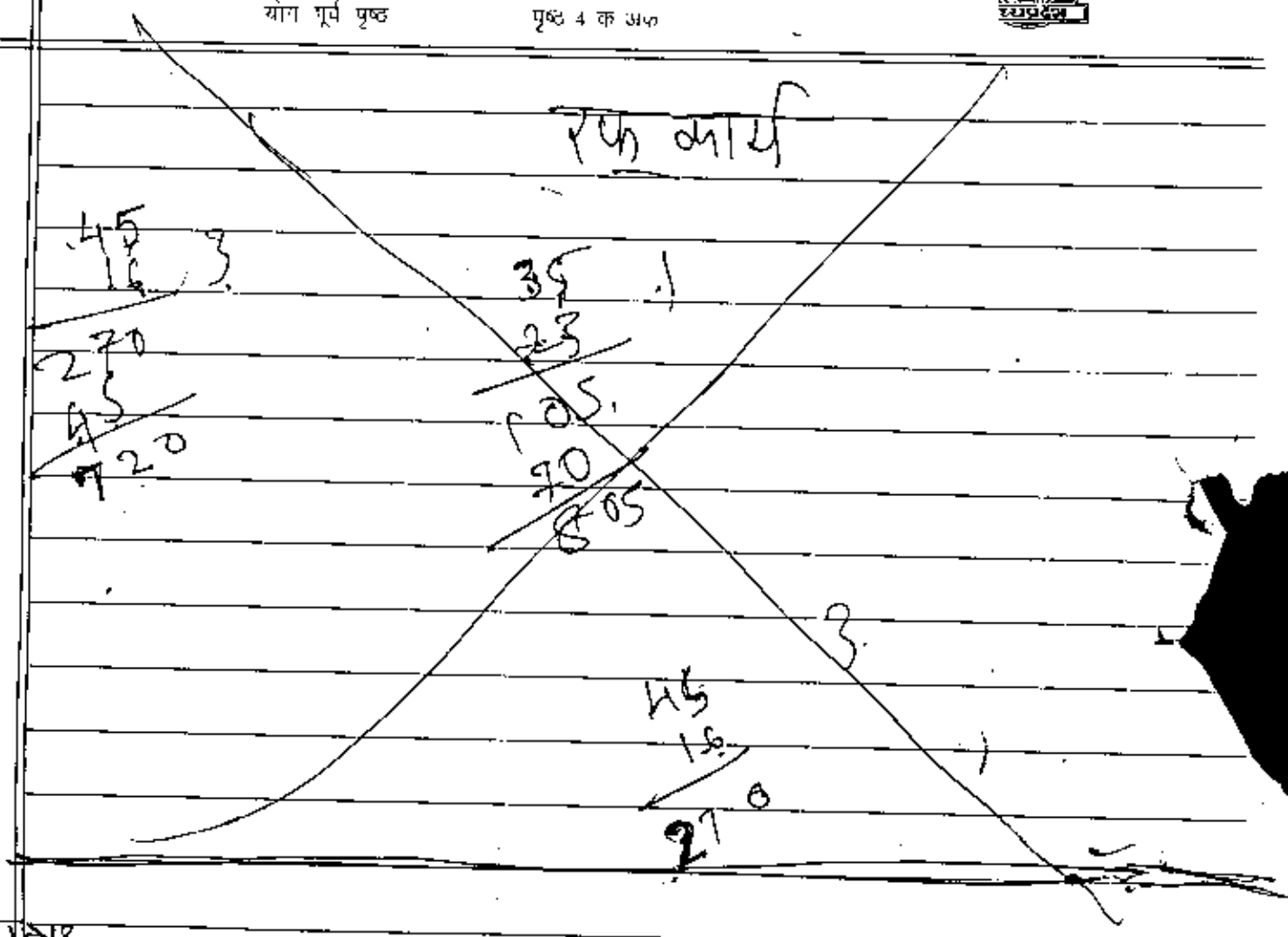

- 45, 15, 3, 270, 45, 720
- 35, 23, 105, 70, 805
- 45, 15, 210

BSEMP

प्रश्न 13
उ⇒ अपकिरण के चार उद्देश्य —

① माध्यों में औसत दूरी का ज्ञान – अपकिरण माध्य मे औसत दूरी का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है।

② तुलनात्मक अध्ययन में सहायक ⇒ अपकिरण द्वारा तुलनात्मक अध्ययन ज्ञात किया जा सकता है।

③ प्रतिनिधित्व ⇒ अपकिरण में प्रतिनिधित्व करने की इच्छा विद्यमान रहती है।।

④ विचारशीलता का ज्ञान ⇒ अपकिरण में विचारशीलता का भी ज्ञान हो जाता है।